अमिया और चीनी का समान बँटवारा

प्रभात

अमिया और कुछ बच्चे मिलकर पहाड़ पर चढ़ने का रास्ता बना रहे थे। तभी अमिया को एक चिथड़ा मिला। चिथड़े में कागज़ के एक-एक रुपए के नोट थे। "मुझे रुपैये मिले।" उसने सबको बताया। बच्चे छोटे थे मगर रुपयों को देखते ही बड़ों की तरह बातें करने लगे।

"अमिया, इनमें से एक रुपैया मुझे देना। तेरे पापा एक दिन हमारे घर आए थे।"

"अमिया, मुझे दो रुपैये देना। तेरे बाबा और मेरे बाबा दिनभर साथ बैठकर हुक्का पीते हैं।"

एक-दो बच्चे कहने के लिए ऐसी कोई बात नहीं सोच पा रहे थे। वे सिर्फ अमिया की तरफ देख रहे थे। तभी एक बच्चे ने अमिया के हाथ के चिथड़े में से एक रुपया ले लिया।

"ठीक है, एक तुम ले लो।" अमिया ने कहा।

ऐसा सुनते ही एक दूसरे बच्चे ने भी अमिया के हाथ के चिथड़े में से एक रुपया ले लिया। "ठीक है, एक तुम भी ले लो।" अमिया उससे बोली।

"अमिया मुझे दो दे दोगी।" तीसरे बच्चे ने अपने आप लेने की बजाय अमिया से पूछा।

"हाँऽऽ।" अमिया ने कहा। और खुद गिनकर उसे दो रुपए दे दिए। अब तो अमिया को मिलाकर कुल तीन बच्चे बचे थे और तीन ही रुपए थे। तीनों ने एक-एक ले लिया।

एक दिन अमिया के पापा दो किलो चीनी लाए। चीनी को हथचक्की में पिसवाकर एक पीपी में रखवा दी। अमिया से कहा, "दो महीने के लिए बाहर जा रहा हूँ। कभी सब्ज़ी, छाछ, चटनी कुछ भी न हो तो इस पिसी चीनी से रोटी खा लिया करना।"

पापा के जाते ही अमिया चीनी को चखने लगी। वह एक बुक्का चीनी खाने घर में जाती और बाहर तेरह-चौदह बच्चों का झुण्ड उसके खेल में लौट आने का इन्तज़ार करता रहता। जैसे ही वह बाहर आती कुछ बच्चे पूछते, "अमिया, खा आई चीनी? कितने बुक्के खाए? पिसी चीनी बूरे जैसे लगती है या किस जैसी लगती है?" अमिया को लगा अकेले-अकेले खाकर वह ठीक नहीं कर रही है।

"अपन सभी एक-एक बुक्का चीनी खा लेते हैं।" अमिया ने कहा। बच्चे तो शायद यही चाहते थे। अमिया ने पीपी में से सबको एक-एक बुक्का चीनी खाने को दी। सभी बच्चे बहुत खुश हुए और इस खुशी को एक बार और पाना चाहते थे। अमिया भी मान गई। उसे भी लग रहा था क्यों न एक-एक बुक्का और खाया जाए। पीपी दो तिहाई बैठ गई।

अगले दिन लगभग पन्द्रह-सोलह बच्चे और खुद अमिया पीपी को बीच में रखकर यह तय कर रहे थे कि अब इस चीनी को दो महीने चलाना है। अमिया ने कहा, "हाँ, यही ठीक रहेगा। ऐसा करते हैं। एक-एक चुटकी ले लेते हैं। फिर इसे ढँककर रख देंगे। खोलेंगे ही नहीं।"

"ठीक है। ठीक है।" सबने एक सुर में कहा।

"चुटकी भर ही लेना है तो दो बार भी ले सकते हैं।" किसी की तरफ से यह सुझाव आया। इसे सभी ने तुरन्त मान लिया। पीपी में से चुटकी से लेने पर चीनी फिसलती जा रही थी। चुटकी में तो चीनी आ ही नहीं रही थी। तो हरेक ने अपने आप ही आधा-आधा बुक्का दो बार खाना तय कर लिया। नतीजा यह कि पीपी खाली हो गई।

दोपहर का यह वाकया है और शाम को अमिया के पिता आ गए थे। हालाँकि आना उन्हें दो महीने बाद था। पर वे तो आ ही गए थे...

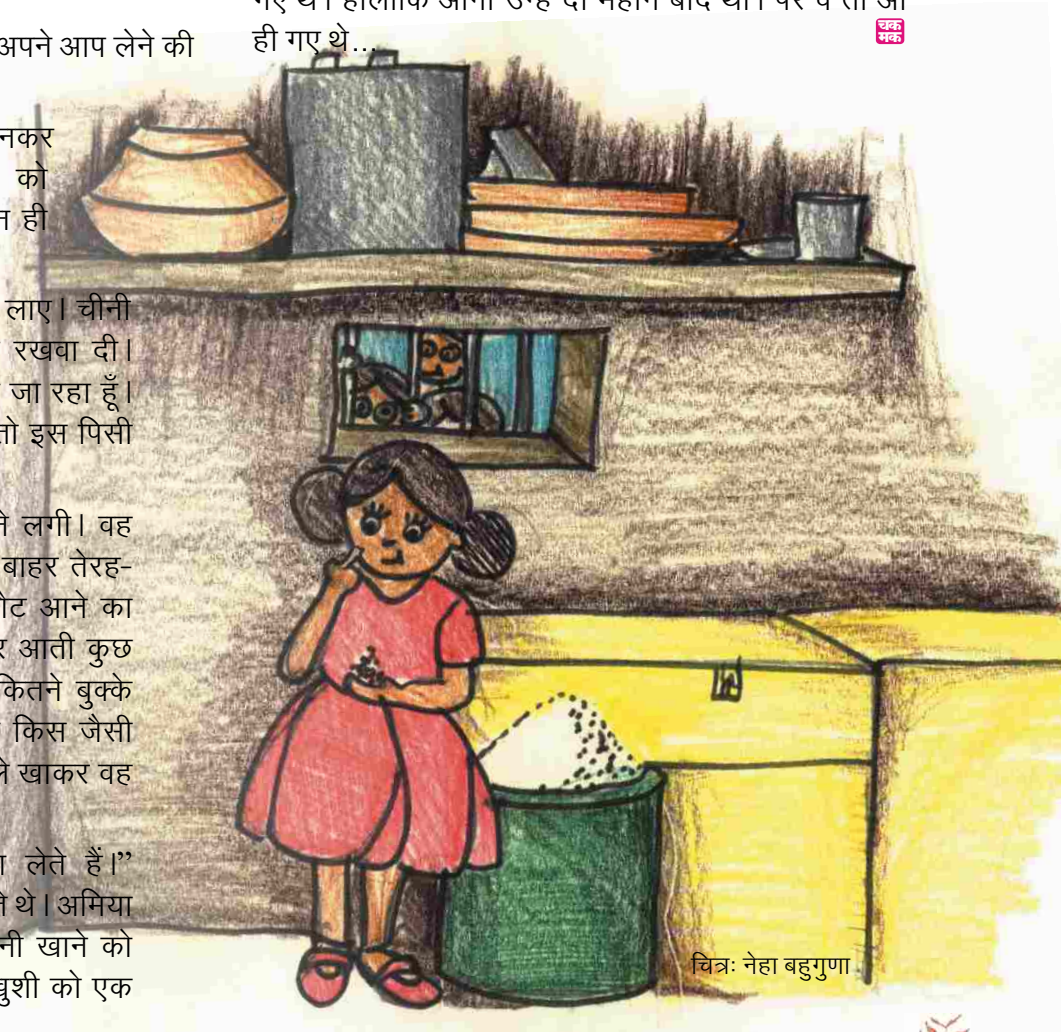

चित्रः नेहा बहुगुणा